सारांश

❖ प्रस्तावना :

शोध में मद्यपान की वास्तविकता का अध्ययन औरंगाबाद जिले के कुटुंबा प्रखंड का क्षेत्रीय अध्ययन किया गया है जिसके अंतर्गत चयनित गांव के उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति शराब सेवन एवं उसका ऐतिहासिक पृष्ठभूमि शराबबंदी के पूर्व और पहले लोहार तथा शराबबंदी के बाद इनके पुनरवसन संबंधित पहलुओं को शामिल किया गया है प्रस्तुत शोध में मद्यपान की वास्तविकता और समाज कार्य हस्तक्षेप को सुझाने एवं इन को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है य ह अध्ययन मे शोधकर्ता द्वारा शोध क्षेत्र के दौरान प्राप्त की गई जानकारी प्राथमिक तथ्य पर आधारित है जि समें कुटुंबा प्रखंड के 30 गांवों के शराब सेवन करने वाले लोगों के सूचनाओं को महत्व दिया गया है जिसके माध्यम से अध्ययन के सभी मुख्य पहलू को सरलता से समझा जा सके साथ ही साथ शोध अध्ययन से प्राप्त सभी पहलुओं को निष्कर्ष के रुप में शामिल भी किया गया है जिसे सरलता से समझा जा सके जो अध्ययन के उपरांत शोधकर्ता द्वारा दिए गए विषय से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य है जिसके माध्यम से शोध की विश्वसनीयता और उसके उपयोगिता को दर्शाया जा सके|

❖ शोध प्रश्न –

1 मद्यपान करने वाले (पूर्व मे) की सामाजिक आर्थिक स्थिति कैसी है ?

2 शराब बंदी से मद्यपान करने वाले (पूर्व मे) की सामाजिक आर्थिक स्थिति मे क्या बदलाव आया है ?

3 मधपान निषेध से समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

❖ **शोध प्रारूप** - अध्ययन का शीर्षक मद्यपान की वास्तविकता और समाज का हस्तक्षेप ; बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले के कुटुंबा प्रखंड का क्षेत्रीय अध्ययन है कुटुंबा प्रखंड के ऐसे 30 गांव का चयन किया गया है जो कि शराब बंदी से पूर्व शराब का सेवन किया करते थे । प्रस्तुत शोध में शराबियों के सामाजिक ,आर्थिक, शराबबंदी के पूर्व और बाद की स्थिति का विस्तृत वर्णन किया

गया है। इसलिए यह शोध मुख्यतः वर्णनात्मक अभिकल्प में आता है , साथ ही निदानात्मक एवं मात्रात्मक प्रारूप का भी प्रयोग किया गया है।

❖ **शोध विधि**

संबन्धित शोध मे निम्नलिखित उपकरणों एवं विधियों का प्रयोग किया गया है

- सर्वेक्षण पद्धति
- संरचित साक्षात्कार
- अनुसूची
- एस पी एस एस सोफ्टवेयर

➢ **मुलभुत प्रश्न का जवाब :**

1. मद्यपान करने वाले (पूर्व मे) की सामाजिक आर्थिक स्थिति कैसी है?
   शराबबंदी से पूर्व अधिकांश परिवार विभक्त परिवार के हैं अधिकांश शराब सेवन करने वाले लोग सामाजिक सोपानों में जाति की श्रेणी में सामान्य वर्ग के हैं अधिकांश हिंदू धर्म के लोग तथा शैक्षणिक रूप से घर के लोग ज्यादा हैं अधिकांश लोग मजदूरी करते हैं और अधिकारिता व्यवहारिक रुप से संपन्न है तथा यह गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोग हैं

2. शराब बंदी से मद्यपान करने वाले (पूर्व मे) की सामाजिक आर्थिक स्थिति मे क्या बदलाव आया है?
   मधनिषेध से समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है घर में एवं परिवार में पति पत्नी के संबंध मधुर हुए हैं बच्चों को ज्यादा समय दिया जा रहा है| समाज के लोग भी अच्छा व्यवहार कर रहे हैं लोग मद्य निषेध नीति का समर्थन कर रहे हैं उनकी इच्छा है कि शराब पूर्ण रुप से बंद हो जाए और पूरे बिहार को नशा मुक्त कर दिया जाए लेकिन यह केवल बातें आदर्शात्मक रूप में सही सिद्ध हो रही है

3. मधपान निषेध से समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है? ,

शोध से स्पष्ट है कि कुछ क्षेत्रों में मानसिक रूप से सकारात्मक बदलाव आए हैं तो कहीं कहीं इसका नकारात्मक प्रभाव ही पड़ा है|

- **संभावित समाज कार्य हस्तक्षेप:-**

कुटुंबा प्रखंड के अंतर्गत शराब सेवन करने वालों को जागरुक करने हेतु मद्यपान निषेध को आकर्षित करने हेतु सुझाए गए समाज कार्य हस्तक्षेप इस प्रकार हैं

1. शराब सेवन करने वालों पर किसी नीति को थोप कर उनमें बदलाव नहीं लाया जा सकता है इसके लिए उनके अंदर की आत्मविश्वास को तथा शराब सेवन से होने वाली हानियों को पूरे प्रखंड एवं जिले में प्रचार प्रसार करना चाहिए|
2. अन्य राज्यों की तरह बिहार में भी महिलाओं को शराबबंदी एवं निषेध हेतु महिला मंडलों की स्थापना कराई जाए|
3. प्रत्येक ग्राम में एक महिला मंडल होनी चाहिए तथा प्रत्येक घर से एक महिला सदस्य होनी चाहिए अगर परिवार का कोई सदस्य शराब सेवन करके आता है तो इसकी सूचना तत्काल स्थानीय प्रशासन या पुलिस को दे जिससे लोगों में शराब सेवन या प्रशासन के प्रति निष्ठा की भावना हो

- **निष्कर्ष -** शराब का विरोध वर्तमान समय में नैतिक उपदेश वर्तमान विज्ञान परक युग में कोई मान्यता नहीं रखता है क्योंकि बढ़ती हुई शराबखोरी न केवल भारत की समस्या है अपितु यह पुरे विश्व की समस्या है देश में शराब सेवन का इतिहास एवं शराबबंदी की नीति को सफलता एवं असफलता के इतिहास को देखने से यह पता चलता है कि यह नीति पूर्ण रुप से अपना उद्देश्य प्राप्त करने में आज तक असफल रही है इसका प्रमुख कारण आधुनिक भौतिकवादी युग का अभीवोदय पाश्चात्य सभ्यता का प्रसार मनुष्य को एक मशीन के रुप में देखना मानवीय संबंधों का जटिल स्वरूप 21वी शताब्दी के मानव के नए मूल्य परंपराओं एवं विश्वासों तथा उसकी दैनिक चिंताएं मानसिक विषाद एवं कुंठाएं यह सभी कहीं न कहीं लोगों के शराब की तरफ आकर्षित

करती है| आज वर्तमान जीवन में पुरानी नैतिक मान्यताएं लगभग स्थिर हो चुकी है लोगों के जीवन से इसका प्रभाव समाप्त हो चुका है लोक दोहरी नैतिकता के राह पर खड़े हैं दोहरी नैतिकता से तात्पर्य ऐसे शब्दों से है जिसके अंतर्गत एक तरफ लोग बड़े मंच पर खड़े होकर शराब बंदी के खिलाफ लंबा चौड़ा भाषण देते हैं| तथा चोरी-छुपे उनमें से अधिकांश लोग शराब का सेवन करते हैं जो अन्य लोग शराब का खुलेआम विरोध करते हैं उनमें से अधिकांश लोग ऐसे भी हैं जो रात के अंधेरे में बोतलें समाप्त कर जाते हैं इस दोहरी नैतिकता के आड़ में क्या शराबी व्यक्ति पर ऐसे लोगों का प्रभाव पड़ता है? शायद नहीं साधारण शराबी उनकी बात को नहीं सुन सकता है| आज जहां पूर्ण मद्य निषेध घोषित किया गया है वहां हजारों की संख्या में लोगों ने बारीनस ,टिकेचर, डीनेचर, स्प्रिट पीकर अपनी जाने गवा दी हैं राज्यों में मद्य निषेध कार्यक्रम लागू किया गया है वहां शराब का अवैध उत्पादन बढ़ा है शराब की चोरी छिपे तस्करी बड़ी है तथा लोगों ने जहरीली शराब पीकर अपने को मौत की बलि वेदी पर चढ़ा दिया है प्रश्न है कि ऐसा क्यों होता है ? एक सीधा और सच्चा उत्तर हो सकता है कि जो लोग पीना चाहते हैं पिऐगे , और लोग कुछ भी कहें मधनिसषेध घोषित करने वाले प्रांतों में शराब पीने वाले लोग इस सिद्धांत को मानकर चलते हैं कि जहां चाह है वहां राह है इन व्यक्तियों के लिए एक ऐसा संदेश है | जिसे वह जीवन का आदर्श मानते हैं शराब पीने वाले लोग उन महान पुरुषों का उदाहरण देते हैं जिन्होंने कहा था कि

"जब मैं पीता हूं तो सोचता हूं और जब मैं सोचता हूं तब पीता हूं"

"शराब देवताओं का पेय है ,दूध बच्चों के पीने की चीज है , चाय स्त्रियों का पेय है तथा पानी जानवरों के पीने की चीज है"

मद्य निषेध की नीति की असफलता से जो सीख ली जा सकती है वह यह है कि शराब पीना बंद नहीं हो सकता है शराब की लत भी भाषण दे कर दूर नहीं की जा सकती है। मादात्यय के दुष्परिणामों से मत कराना , उनको यह बताना कि शराब से उनको बड़े नुकसान हो सकते हैं तथा शराब की आदत डालना न तो उनके हित में है और ना उनके परीवार के सदस्यों के हित में। इसके अतिरिक्त यदि कुछ और काम करने है तो शराब की दुकानों को शहर से दूर स्थापित किया जाना चाहिए , महीने की पहली तारीख या पहले हफ्ते में शराब की बिक्री बंद कर दीजिए,
शराब के आकर्षक विज्ञापनो बंद कर दीजिये,
शराब का दाम बढ़ा दीजिए,

छोटी उम्र के लोगों के शराब पीने पर रोक लगा दीजिये,
शराब की बोतलों पर" शराब विष है " की चेतावनी का लेबल लगा दीजिए तथा आम शराब के नशीले पन की मात्रा को इतना कम कर दीजिए कि शराब शरीर को जर्जर एवं रुग्ण तथा उन लोगों पर निगरानी रखिए जो खुद शराब पीते हुए भी दूसरों को नसीहत देते हैं। ***(समाज कार्य , संपादक- संगीता तेज ,लेखक – संगीता तेज एवं तेजसकर पाण्डेय)***

Summary

➢ Introduction:

The study of the drinking alcohol has been done in the field of study of the kutumba circle of Aurangabad district, under which the social and economic status of the respondents of the selected in villages. Alcohol consumption and its historical background before and after the prohibition of alcoholism and their rehabilitation aspects after the prohibition has been included in the research. The reality of drinking alcohol and intervention of social work also included in this research and an attempt has been made to explain that . The information obtained during the research by the researcher in the field of research is based on the primary facts in which the importance of the information of people consuming liquor in 30 villages of the family group has been given significant. All the main aspects of the study can be easily understood, as well as all the aspects obtained in the research.

➢ Research questions

-

1. How is the socio economic status of alcohol consumer ?
2. What has come change in the socio-economic status of the alcohol consumer after alcohol prohibition?

3. What kinds of effect have done after the prohibition of alcohol on the society?

- **Research design-**

The title of the study; "The reality of drinking of society and tentative social work intervention; Regional study of the kutumba block of Aurangabad district of Bihar state". 30 villages of the kutumba block have been selected which used to consume alcohol befor to alcohol restriction. In this research presented, a detailed description of the condition of alcoholism before and after thealcohol prohibition social, economic, mental status of the research area . Therefore, this research contain mainly descriptive , diagnosis and quantitative design.

- **Research method**

The following tools and methods have been used in related research

- survey method
- Structured Interview
- schedule
- SpsS Software

- **Answer of basic research question:**

1. How is the socio economic status of alcohol consumer ?

Most of the families befor alcohol prohibition are divided wich selected in this research. the majority of the people who drink alcohol are belong from general category also mostly hindu society. The ratio of economical condition is not equal . some family belong from high richness and some from BPL.

2. What has come change in the socio-economic status of the alcohol consumer after alcohol prohibition?

There has been a positive effect on the society after the alcohol prohibition. Husband and wife have had good relations in the family. Children are being given more time their parents. People of the society are also behaving well. People are supporting the prohibition of alcohol policy. They wish that alcohol should be completely closed and all Bihar should be turned into drug addicts, but only things are being proved right in the ideological form.

3. What kinds of effect have done after the prohibition of alcohol on the society? ,

It is clear from the research that in some areas there have been some positive effect on the mental status and on other negative.

- **Tentative social Work Interventions: -**

Here are the suggested social work interventions to attract alcohol intake to be aware of alcohol consumption under the kutumba block.

1. Alcohol consumption cannot be changed by imposing any policy and hence, the confidence in them and the loss of alcohol consumption should be spread throughout the block and district.

2. Like other states, women councils should be established in Bihar for women's alcohol prohibition .

3. There should be a women's division in each village and every woman should be a member of the household if a member of the family comes after drinking alcohol, then report it immediately to the local administration or the police, so that people should be liable to alcohol consumption or administration

- **Conclusion -** Opposition to Alcohol at present, moral precepts do not hold any recognition in the present age of science because the increasing alcoholism is not only the problem of India, but it is the problem of the entire world. The history of alcohol consumption in the country and the policy of prohibition of alcoholism is the history of failure. It shows that this policy has failed completely to achieve its objective till its head Nowadays of the modern materialistic era, the spread of Western civilization, see human

beings as a machine; complex form of human relations; new values of human beings of 21st century traditions and beliefs; and its daily concerns; mental depression and frustrations; Attracts the side. Today, in the present life, the old moral beliefs have almost become steady and meanigless. People have lost their influence from the lives of people. Standing on the path of dual morality, dual morality refers to words under which people on one side stand on a big platform and drink alcohol. Give a long wide speech against alcoholism other side are stealing and consuming alcohol. Others who openly oppose alcohol, most of them are those who end the bottles in the darkness of the night, under the banner of this dual morality. Do people have an impact? Perhaps no ordinary alcoholic can not hear their point.